201hi04

4

आह्वान

संसार में जो भी उपलब्धियाँ हैं, उन सबके पीछे एक ही चीज़ दिखाई देती है, वह है— पुरुषार्थ, परिश्रम, मेहनत। आज कृषि, चिकित्सा–विज्ञान आदि के क्षेत्र में जो प्रगति हुई है, वह पुरुषार्थ के बिना भला कैसे संभव हो सकती थी। क्या आलसी व्यक्ति यह सब कर सकते थे? आप दसवीं कक्षा पास करना चाहते हैं। क्या आपके आलस्य से काम बन पाएगा? मात्र भाग्य के भरोसे बैठे रहना, परिश्रम न करना, न तो बुद्धिमत्ता है और न ही सफलता पाने का ज़रिया। भाग्यवाद तो व्यक्ति को आलसी बना देता है। यह प्रगति का शत्रु होता है। तुलसीदास जी ने यही कहा है— 'सकल पदारथ एहि जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।' तो आलस्य छोड़ो, कर्महीनता त्यागो। इसी तरह कठोपनिषद् में भी कहा गया है—

— उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधात।

अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठतम को प्राप्त कर उन्हें जानो।

प्रस्तुत कविता का स्वर भी ऐसा ही है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- कर्म और परिश्रम के संबंध की व्याख्या कर सकेंगे;
- जीवन में उन्नति और प्रगति के लिए पुरुषार्थ के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- राष्ट्र के विकास के लिए एकता और भाईचारे के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- 'भाग्यवाद मनुष्य को अकर्मण्य बना देता है'— कथन की व्याख्या कर सकेंगे;
- रूपक तथा दृष्टांत अलंकारों को पहचान कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता की पंक्तियों का अपने शब्दों में अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता के भाव-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे;
- कविता की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

टिप्पणी

4.1 मूल पाठ

आइए, पहले निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं। हाशिए पर कठिन शब्दों के अर्थ दिए जा रहे हैं–

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आओ, मिलें सब देश–बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख–शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविधा सुमनों की कहो?

–मैथिलीशरण गुप्त

शब्दार्थ

व्यर्थ	– बेकार, निरर्थक
आगे बढ़ना	– पहल करना/विकास करना
ऊँचे चढ़ना	– अपनी क्षमता बढ़ाना/ तरक्की करना/ प्रगति करना,
भावना	– इच्छा, कामना
पुरुषार्थ	– कर्म, पौरुष
पाठ पढ़ना	– आचरण करना/सीखे हुए पर अमल करना
ग्रास	– निवाला, कौर, टुकड़ा
उद्यम	– परिश्रम, मेहनत, प्रयास
पीछे पड़े	– पिछड़ गए
कर्म-तैल	– कर्मरूपी तेल
विधि-दीप	– भाग्यरूपी दीपक
दैव	– विधाता, भाग्य
साँचा	– मूर्तियाँ बनाने का खाँचा या फर्मा
दोष मढ़ना	– जिम्मेदार ठहराना
देश-बांधव	– देश के नागरिक भाई-बहन
साधक	– साधना या परिश्रम करने वाले
ऐक्य	– एकता
विविध	– अनेक प्रकार के

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

4.2 आइए समझें

4.2.1 अंश-1

ध्यान दें कि यह कविता सन् 1912 के आस–पास, तब लिखी गई थी जब हमारा देश गुलाम था। आपने आधुनिक भारत के इतिहास में पढ़ा होगा कि किस तरह सन् 1857 के स्वाधीनता–संघर्ष में अंग्रेज़ों ने भारत के लोगों का क्रूरतापूर्वक दमन किया। अंग्रेज़ों ने अपने यहाँ की मिलों में बनी विदेशी वस्तुओं से भारतीय बाज़ारों को भरकर देशी कारीगरों को बेरोज़गार बना दिया गया। यह दमन निरंतर जारी रहा। कवि का परिचय सहमी और डरी हुई जनता से हुआ। कवि को आशंका थी कि ऐसी स्थिति में देश की जनता निराश होकर भाग्यवादी न बन जाए अर्थात् भाग्य के भरोसे न बैठ जाए। अतः इस कविता के माध्यम से वह देश की जनता को जगाकर कर्म और संघर्ष की प्रेरणा देता है।

हे भारतवासियों! निरर्थक अर्थात् बेकार क्यों बैठे हो? अगर अपने दुखों से मुक्ति पाना चाहते हो तो उठो और सफलता की चोटी छूने के लिए चल पड़ो। सफलता पाने अर्थात् जीवन में कुछ सार्थक या अच्छा काम करने के लिए चलना ही पड़ता है, परिश्रम करना

ही पड़ता है। अब भाग्य के बदलने या परिस्थितियाँ सुधारने की प्रतीक्षा में बैठे रहना छोड़ो। केवल कर्म या पुरुषार्थ के मार्ग पर चलो क्योंकि परिस्थितियाँ अपने आप नहीं बदलतीं, उन्हें मनुष्य अपने उद्यम से बदलता है। भारतीयों के मन में फैली हुई निराशा और आलसीपन को देखकर कवि को दुख होता है। देशवासियों का उद्बोधन करते हुए कवि एक उदाहरण देते हुए कहता है– तुम जानते हो कि सामने रखा निवाला भी अपने–आप मुँह में नहीं जाता, उसके लिए प्रयास करना पड़ता है यानी हाथ बढ़ाकर उसे उठाना होता है। कवि खेद प्रकट करते हुए कहता है कि यह सब जानते हुए भी हम दुख से मुक्त होने के लिए उद्यम नहीं करते। यह आवश्यक है कि हम समस्त देशवासी निराशा के अंधकार से बाहर निकलें, सुस्ती की जकड़न को तोड़ फेंके और देश की दशा सुधारने के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट जाएँ।

चित्र 4.1

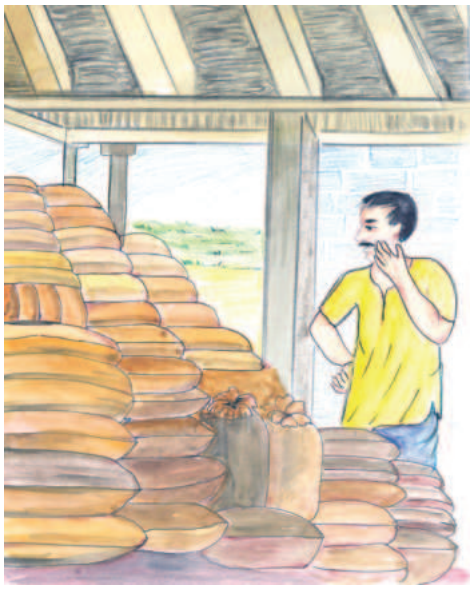

चित्र 4.2

इसी भाव से संबंधित संस्कृत की एक कहावत है–'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् उद्यम या प्रयास करने से ही किसी कार्य में सफलता मिलती है, केवल इच्छा रखने या सपने देखने से नहीं।

रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता की इस पंक्ति को भी देखिए– 'खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़!' अर्थात् मनुष्य जब दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता है तो पहाड़ के पाँव भी उखड़ जाते हैं यानी हिम्मत के बल पर पहाड़ पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। हम जिस विकास के चरण पर आज पहुँचे हैं, उसके लिए हमारे पूर्वजों ने पहाड़ को काटकर रास्ते बनाने जैसा असंभव कार्य कर दिखाया है। इस बात से यही सिद्ध होता है कि कठिनाइयों पर विजय पाने का बस एक ही उपाय है, और वह है– आलस्य छोड़कर प्रयास और परिश्रम में जुट जाना। आलस्य तो शरीर के भीतर छिपा हुआ शत्रु है– 'आलस्यं हि मनुष्याणाम् शरीरस्थो महान् रिपुः।'

इस कविता को पढ़ते हुए इसकी भाषा पर आपका ध्यान जरूर गया होगा। इस अंश में दो प्रयोग अपने सामान्य अर्थ से कुछ भिन्न अर्थ दे रहे हैं। वे हैं– आगे बढ़ना और ऊँचे चढ़ना। इनके प्रयोग से अभिव्यक्ति में विशेष अर्थ–सौंदर्य आ गया है।

आगे बढ़ो और ऊँचे चढ़ो का प्रयोग हमेशा इस अर्थ में नहीं होता। जैसे किसी व्यक्ति से आप जल्दी चलने, पहल करने या आगे चलने के लिए कहें तो कह सकते हैं– आगे बढ़ो। आप किसी लाइन में खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं। आगे के लोग धीरे–धीरे आगे बढ़ रहे हैं, आपसे आगे वाला वहीं खड़ा है तो आप उससे कह सकते हैं– 'आगे बढ़िए', या 'आगे बढ़ो'। इसी प्रकार 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग भी ऊपर चढ़ने के सामान्य अर्थ में हो सकता है। कविता में 'आगे बढ़ो और 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग पहल करने, विकास करने या प्रगति करने के अर्थ में हुआ है।

कविता में कभी–कभी किसी अर्थ को पाठक या श्रोता तक पहुँचाने के लिए कुछ दृष्टांतों अथवा उदाहरणों का उपयोग किया जाता है। जैसे इस पंक्ति में यह बात कही गई कि कोई भी वस्तु बिना प्रयास के प्राप्त नहीं होती। फिर एक दृष्टांत दिया गया कि खाने के लिए निवाले को मुँह में रखने के लिए भी प्रयास करना पड़ता है। यहाँ दृष्टांत अलंकार है।

इस काव्यांश में 'हा' खेद अथवा दुख प्रकट करने के लिए आया है। यह विस्मयादिबोधक शब्द है। हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए हिंदी में अनेक विस्मयादिबोधक शब्द हैं, जैसे वाह!, आह!, अहा! शाबाश! आदि।

जब यह कविता लिखी गई थी तो देश में स्वाधीनता आंदोलन ज़ोरों पर था और देशभक्त इन पंक्तियों को गाते हुए सत्याग्रह के जुलूसों एवं प्रभातफेरियों में भाग लेते थे। जानते हैं क्यों? क्योंकि इन पंक्तियों में एक ऐसा ओज और प्रवाह है, जो निराशा में डूबे हुए व्यक्ति के मन में भी जोश और उत्साह भर देता है। ऐसी भाषा को 'ओजपूर्ण' भाषा कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न-4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने किन्हें पौरुष का पाठ पढ़ने के लिए कहा है?

   (क) आलसी लोगों को ☐ (ख) भाग्य का विरोध करने वालों को ☐

   (ग) आगे बढ़ने वालों को ☐ (घ) ऊँचे चढ़ रहे लोगों को। ☐

2. जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?

   (क) भाग्यहीन ☐ (ख) भाग्यवादी ☐

   (ग) भाग्यवान ☐ (घ) भाग्यशाली ☐

3. कर्म के बारे में क्या सच नहीं है?

   (क) स्वस्थ, चुस्त और सतर्क बनाता है। ☐

   (ख) आराम करने का अवसर प्रदान करता है। ☐

   (ग) कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है। ☐

   (घ) एक सफल मनुष्य बनाता है। ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-4.1

कविता के इस अंश को समझते हुए आपने विस्मयादिबोधक शब्दों के बारे में पढ़ा। यह भी जाना कि हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नीचे कुछ विस्मयादिबोधक शब्द और जिन स्थितियों में उनका प्रयोग किया जाता है, वे स्थितियाँ दी जा रही हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए :

शब्द		स्थिति
अरे	—	विस्मय
अरे–अरे	—	सावधान करना
हाय	—	कष्ट या पीड़ा
अहा	—	हर्ष
आह	—	दुख, पीड़ा
ओह	—	विस्मय, कष्ट, खेद
उफ़	—	कष्ट, खेद
वाह	—	आश्चर्य, सराहना, उत्साहवर्धन
शाबाश	—	सराहना, उत्साहवर्धन
हुँह	—	तिरस्कार, उपेक्षा

अब आप उपर्युक्त विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसे वाक्य लिखिए जिनमें ये शब्द उचित रूप में आए हों–

1. .....

2. .....

4.2.2 अंश-2

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आइए, अब दूसरे अंश को समझने के लिए उसे एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

इस काव्यांश को पढ़ते हुए आप जान गए होंगे कि कवि ने इसमें भी भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है, पर कुछ अलग ही तरह से, नए उदाहरणों के द्वारा।

इस अंश की पहली पंक्ति में कवि एक सूचना देते हुए कहता है कि जो लोग पीछे थे, वे आगे बढ़ गए हैं और बढ़ते जा रहे हैं। आप समझ रहे हैं कि यहाँ किन लोगों के बारे में कहा जा रहा है?

इतिहास पढ़ते हुए आपने शायद जाना होगा कि सभ्यता के विकास के दौर में भारत बहुत समृद्ध देश था। इसकी समृद्धि विश्व में विख्यात थी और इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। इसकी तुलना में विश्व के अन्य देश क़ाफी पीछे थे। किन्तु आगे चलकर पश्चिम के कई देशों में नए–नए आविष्कार किए गए। वहाँ के लोग परिश्रम और अभ्यास के बल पर अपने देश में औद्योगिक क्रान्ति ले आए और विकास करते गए।

चित्र 4.3

प्रगति के पथ पर अग्रसर उन्हीं देशों की ओर इशारा करते हुए कवि कहता है कि वे लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम शासकों के दमन से भयभीत, हताश और निराश होकर भाग्य के भरोसे बैठे हैं। बदलते हुए समय के अनुसार अपने को बदलने के लिए परिश्रम नहीं करते और अपनी हर असफलता के लिए भाग्य को दोषी मानते हैं। एक कहावत में कही गई बात बिलकुल सत्य है– 'दैव–दैव आलसी पुकारा' अर्थात् आलसी लोग कर्म नहीं करते और विपत्ति आने पर केवल भाग्य को दोष देते हैं। ऐसे लोग नहीं जानते कि कर्म–रूपी तेल के बिना कभी भी भाग्य–रूपी दीपक नहीं जल सकता। अर्थात् जिस तरह दीपक को जलाने के लिए तेल का होना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक है। इसी बात को कवि एक दूसरे उदाहरण से समझाते हुए कहता है कि मूर्ति ढालने या बनाने से पहले उसका साँचा या फर्मा बनाना आवश्यक होता है और यह साँचा मनुष्य अपने परिश्रम से बनाता है। भगवान भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो परिश्रम करना जानते हैं। उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में प्रचलित इन कहावतों को पढ़िए

चित्र 4.4

उर्दू– हिम्मते मर्दां मददे खुदा। अर्थात्– मनुष्य हिम्मत करे तभी भगवान मदद करता है।

आह्वान

यही कहावत अंग्रेजी में इस प्रकार है— God helps those who help themselves.

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि मेहनती लोग ही अपनी मेहनत या अभ्यास से ईश्वर की कृपा का प्रसाद पाकर जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। अतः हमें आलस छोड़कर मेहनत करनी चाहिए, तभी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है।

टिप्पणी: यहाँ आपने देखा कि कवि ने परिश्रम या कर्म के महत्त्व को दीपक और तेल के माध्यम से समझाया है। इस तरह के वर्णन से इन पंक्तियों में रूपक अलंकार है। आइए रूपक अलंकार के बारे में जानें—

रूपक अलंकार

परिभाषा- उपमेय पर जब उपमान का आरोप कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। इस स्थिति में उपमान और उपमेय एकरूप हो जाते हैं। जैसे– मुखरूपी चंद्रमा।

पाठ में पंक्ति है—

'पर कर्म—तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं'

आइए, पहले परिभाषा में प्रयुक्त उपमेय, उपमान तथा 'एकरूप वर्णन' शब्दों का मतलब समझें।

उपमेय- कविता की पंक्ति में जिस वस्तु का वर्णन हो, उसे 'उपमेय' कहते हैं। इस उदाहरण में 'कर्म' तथा 'विधि' उपमेय है।

उपमान- जिस वस्तु से उपमेय की तुलना की जाती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है' में चंद्रमा उपमान है। कविता की पंक्ति में 'तैल' और 'दीप' उपमान हैं।

एकरूप वर्णन— उपमा अलंकार में उपमेय और उपमान की तुलना की जाती है। पर रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का वर्णन इस तरह मिला कर किया जाता है कि दोनों में कोई भेद नहीं रहता। इस तरह के एकरूप वर्णन को 'उपमेय पर उपमान का आरोप' कहते हैं और जहाँ उपमेय पर उपमान का एकरूप आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पाठगत प्रश्न-4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?

   (क) भाग्य के सहारे ☐ (ख) ईश्वर की कृपा से ☐

   (ग) साँचे में ढलकर ☐ (घ) कठिन परिश्रम करके ☐

टिप्पणी

2. उपमेय कहा जाता है–

(क) जिसकी तुलना की जाए ☐ (ख) जिससे तुलना की जाए। ☐

(ग) जिसका आरोप हो। ☐ (घ) जो एकरूप हो। ☐

3. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों को उनके सामने कोष्ठक में दिये गए दो विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए:

(क) पश्चिम के लोग ..... के बल पर ही हर क्षेत्र में विकास कर सके हैं। (परिश्रम/सुविधाओं)

(ख) परिश्रम न करने पर यदि हम असफल हुए तो इसके लिए ..... दोषी हैं। (भगवान/परिस्थितियाँ/हम स्वयं)

(ग) कर्मरूपी ..... (भाग्य/तेल) के बिना भाग्यरूपी ..... (दीप/भाग्य) नहीं जल सकता।

(घ) ..... बनाने की अपेक्षा ..... बनाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (साँचा/मूर्ति)

4.2.3 अंश-3

आइए, हाशिए पर दिए गए कविता के तीसरे अंश को एक बार फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

आपने एक कहानी शायद पढ़ी या सुनी होगी जिसमें एक व्यक्ति के तीन बेटे आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। उनके झगड़े से दुखी पिता ने एक दिन उन्हें बुलाया और तीनों के हाथ में एक–एक लकड़ी देकर उसे तोड़ने को कहा। तीनों ने अपने–अपने हाथ में आई अकेली लकड़ी को आसानी से तोड़ दिया। फिर उस व्यक्ति ने अपने बेटों को तीन–तीन लकड़ियाँ देकर कहा कि इन लकड़ियों को एक साथ मिलाकर तोड़ो। पिता की आज्ञानुसार बेटों ने उन लकड़ियों को इकट्ठा करके तोड़ने की चेष्टा की पर असफल रहे। यह कहानी हमें क्या शिक्षा देती है? यही कि एकता में बल है। कविता में भी देशवासियों को एक होकर रहने के लिए कहा गया है।

आओ, मिलें सब देश-बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?

हम सब जानते हैं कि भारत अनेक धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों का देश है। जब तक सब लोग एकजुट होकर देश के विकास के लिए कार्य नहीं करेंगे, तब तक देश गुलामी, गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए इस अंश में कवि कहता है–

देशवासियो! माना कि हम अलग–अलग जातियों व संप्रदायों से जुड़े हुए हैं, पर भारत के नागरिक होने के नाते हम सब भाई–भाई हैं। इसलिए आओ, सब मिलकर देश को एकता के सूत्र में बाँधों और सुख–शांतिमय उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करें। सुख कैसे मिलेगा? आज़ादी से। शांति कैसे आएगी? गरीबी दूर होने से। गरीबी दूर कैसे होगी? गरीबी दूर होगी अपना शासन स्थापित करके। इसके लिए हमें एक होकर संघर्ष

करना पड़ेगा। समृद्धि और शांति लाने के लिए आओ, हम मिलजुल कर कठिन परिश्रम करें। कवि कुछ प्रश्नों के रूप में देश की जनता को एक होने के लिए कहता है। वह पूछता है कि क्या हम लोगों की जाति, धर्म, संप्रदाय अलग–अलग होने पर भी हम एक नहीं हो सकते? कवि कहना चाहता है कि इन आधारों पर भिन्नता एकता के मार्ग में बाधक नहीं है। हम एक देश के होने के नाते एक हो सकते हैं। इसी तरह वह कहता है कि क्या अलग–अलग प्रकार के फूलों को इकट्ठा करके एक माला नहीं बनाई जा सकती? आशय है, बनाई जा सकती है। जिस प्रकार यह हो सकता है, वैसे ही हम सब भी एक हो सकते हैं।

चित्र 4.5

कविता के इस अंश में कवि ने पुनः एक दृष्टांत का उपयोग किया है, वह है– 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' यह दृष्टांत कवि के किस कथन के उदाहरण स्वरूप आया है। जी हाँ, कवि पहले यह कह चुका है कि धर्म, संप्रदाय, मत और जाति की भिन्नता का होना किसी भी देश के विकास में बाधक नहीं बन सकती। कवि ने एकता को गले का हार कहा– यहाँ रूपक है। इसके बाद कवि अपनी बात का तर्क देते हुए कहता है कि क्या अनेक प्रकार के फूलों से एक माला नहीं बन सकती? बन सकती है, और बेहतर माला बन सकती है। ठीक उसी प्रकार हम अनेक भाषाएँ बोलने वाले विभिन्न धर्मों के अलग–अलग प्रदेशों में रहने वाले लोग मिलकर देश को एक बनाकर उसे बेहतर ढंग से मज़बूत कर सकते हैं। वैसे भी भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है।

चित्र 4.6

क्रियाकलाप-4.2

आप अपने आस–पास के कुछ ऐसे लोगों को अवश्य जानते होंगे, जो पहले बहुत गरीबी या भयंकर विपत्तियों से घिरे हुए थे, पर आज वे खुशहाल या सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे कम–से–कम दो लोगों के बारे में उल्लेख कीजिए जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त की।

....

....

....

टिप्पणी

4.3 भाव-सौंदर्य

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने देश की निराश, हताश तथा निष्क्रिय जनता का आह्वान किया है। कवि देश की जनता में नवीन उत्साह का संचार करके उसे कर्मशील बनाना चाहता है। कवि की इच्छा है कि देश न केवल अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त हो, बल्कि मुक्त होकर आगे बढ़े, विकास करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि विभिन्न संप्रदायों, मतों तथा धर्मों आदि के बीच एकता कायम करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। यह कविता इन सब बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ यह कविता जिस समय में लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

4.4 भाषा-सौंदर्य

आपने प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने निराश और हताश हो जाने वाले लोगों को देखा होगा। ऐसे लोगों को भी देखा होगा जो इन निराश, हताश लोगों को उत्साहित करते हैं, निराशा से उबारते हैं। निराश, आलसी तथा अकर्मण्य लोगों को कर्म के लिए प्रेरित करते समय विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है। आपने जो कविता पढ़ी उसकी भाषा–शैली भी ऐसी ही है। कवि देश की जनता का उद्बोधन करके उसका आह्वान करता है। आप जानते हैं उद्बोधन और आह्वान में क्या अंतर है? किसी व्यक्ति, समूह अथवा समाज को संबोधित करना उद्बोधन है। कवि देश की जनता का उद्बोधन कर रहा है। किसी बड़े उद्देश्य हेतु कर्म के लिए प्रेरित करना आह्वान कहलाता है। आह्वान के लिए यह आवश्यक है कि उसमें उद्बोधन और आह्वान करने वाला स्वयं को भी शामिल करे। वरना वह उपदेश मात्र बनकर रह जाएगा। कविता के आरंभिक दो छंदों में लगता है जैसे कवि जनता को उपदेश दे रहा है, लेकिन अंतिम अनुच्छेद में ऐसा नहीं है। दरअसल, निराशा, आलस एवं अकर्मण्यता से ग्रस्त देश की जनता को कवि जगाने की कोशिश कर रहा है। जब जनता उत्साह से भरकर देश के विकास के लिए आगे बढ़ती है, तो उसके साथ कवि भी हो लेता है। इसलिए यह कविता आह्वान की कविता है।

अब उपर्युक्त बातों के आधार पर इस कविता की भाषा–शैली पर ध्यान दीजिए। इसमें आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो, जो तुम्हारे पीछे थे, आगे बढ़ रहे हैं, भाग्य के भरोसे मत रहो, आओ, मिलें साधक बनें– ये सभी पद आह्वान की शैली के सूचक हैं। यह शैली सुनने वाले में जोश और उत्साह भरती है, ऐसा जोश और उत्साह कि वह बड़े–से–बड़े पहाड़ से टक्कर ले सके। देश की तरक्की के लिए हमें ऐसे ही उत्साह की आवश्यकता पड़ती है।

पाठगत प्रश्न-4.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. हमारे देश की क्या विशेषता है?

   (क) यहाँ प्राचीन काल में औद्योगिक क्रांति हुई। ☐

   (ख) यहाँ अनेक धर्मों–संप्रदायों के लोग रहते हैं। ☐

   (ग) यहाँ के लोगों ने दूसरे देशों पर शासन किया। ☐

   (घ) यहाँ धर्म के आधार पर एकरूपता है। ☐

2. सुख–शांतिमय उद्देश्य क्या है?

   (क) आज़ादी और खुशहाली ☐

   (ख) उद्यम और आराम। ☐

   (ग) घोर परिश्रम ☐

   (घ) शांति के लिए प्रार्थना ☐

3. 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' पंक्ति का क्या आशय है?

   (क) अनेक प्रकार के फूलों की माला बननी चाहिए। ☐

   (ख) अनेकता होने पर भी एकता हो सकती है। ☐

   (ग) विविधता एकता में बाधक है। ☐

   (घ) सभी को एक ही तरह से रहना चाहिए। ☐

4.4 योग्यता-विस्तार

काव्यांश 'भारत भारती' नामक काव्य से लिया गया है जिसके रचनाकार राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में 1886 ई. में हुआ। इन्होंने लगभग चालीस मौलिक तथा छह अनूदित पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'रंग में भंग', 'भारत भारती', 'साकेत', 'यशोधरा, 'द्वापर', 'जयद्रथ वध', 'जय भारत', 'विष्णुप्रिया', 'पंचवटी', 'प्रदक्षिणा' आदि उल्लेखनीय हैं।

सबसे पहले 'भारत भारती' ने ही गुप्त जी को ख्याति दिलाई। इस पुस्तक ने हिंदी भाषियों में अपनी जाति और देश के प्रति गौरव और गर्व की भावनाएँ विकसित कीं और तभी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी अनेक अन्य रचनाएँ भी राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हैं।

टिप्पणी

खड़ी बोली के स्वरूप को निखारने में गुप्त जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज हम जिस हिंदी भाषा के उत्तराधिकारी हैं, उसे काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम कवि गुप्त जी ही थे।

आपने क्या सीखा

- भाग्य भी उसी का साथ देता है जो परिश्रमी तथा कर्मशील होते हैं। इसलिए व्यर्थ बैठकर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
- उद्यम अर्थात् प्रयास से ही सफलता प्राप्त होती है, उसे बैठे–ठाले प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- जिन लोगों ने भी विकास किया है, वे परिश्रमी और संघर्षशील थे, अतः उनसे प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए। असफलता के लिए भाग्य को दोषी नहीं मानना चाहिए।
- जिस प्रकार तेल के बिना दीपक नहीं जल सकता, साँचे के बिना मूर्ति नहीं बन सकती, वैसे ही कर्म और योजना के बिना जीवन में कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- भारत अनेकता में एकता वाला देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते है, लेकिन इनकी अनेकता देश की एकता में बाधक नहीं। सभी लोग देश के लिए एक होकर उसका विकास कर सकते हैं।
- 'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्त का ऐसा काव्य है जिससे देशवासियों को अंधकार और निराशा से जूझने की प्रेरणा मिलती है।
- इस काव्यांश की भाषा ओजपूर्ण एवं उद्बोधनपरक है।
- रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का एकरूप वर्णन किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. भाग्यवादी किसे कहते हैं? क्या मनुष्य को भाग्य के सहारे ही आगे बढ़ना चाहिए?
2. पिछड़े देश और समाज भी हमसे आगे निकल गए, आपके विचार से इसका क्या कारण हो सकता है?
3. 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का क्या आशय है?
4. कवि देशवासियों का आह्वान कर उनसे क्या आशा करता है?
5. 'विविध सुमनों की एक माला' से क्या तात्पर्य है और यह उदाहरण क्यों दिया गया है?

6. काव्य–सौंदर्य स्पष्ट दीजिए–

   पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
   है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

7. कवि देशवासियों को क्या आत्मबोध कराना चाहता है? क्या देश के प्रति हमारे भी कुछ कर्त्तव्य हैं? उल्लेख कीजिए।

8. देश के विविध धर्मों/संप्रदायों के बीच पारस्परिक एकता का महत्त्व समझाइए।

9. सांप्रदायिक समस्या के समाधान के लिए कोई दो उपाय सुझाते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचारपत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

10. मैथिलीशरण गुप्त की एक अन्य कविता की नीचे लिखी पंक्तियों का अर्थ लिखिए। बताइए ये पंक्तियाँ कविता की किन पंक्तियों से मिलती जुलती हैं?

    नर हो न निराश करो मन को।
    कुछ काम करो, कुछ काम करो।
    जग में रहकर कुछ नाम करो।।
    यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
    समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।

11. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

    हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
    उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
    जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,
    व्योम तम–पुंज हुआ सब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

(i) भारत का अभिनंदन किसने और कहाँ किया?

(ii) 'जगे हम' कथन में 'हम' कौन हैं?

(iii) किस पंक्ति का आशय है कि भारत ने सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

(iv) ज्ञान का प्रकाश फैलने से संसार पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न-4.1

1. क, 2. ख 3. ख

4.2 1. घ 2. क

3. क. परिश्रम, ख. हम स्वयं, ग. तेल, दीप, घ. मूर्ति, साँचा

4.3 1. ख 2. क 3. ख